विभिन्न औडव जाति प्रधान रागों का मध्य लयाधारित गायन शैलियों में मूल्यात्मक व क्रियात्मक अध्ययन

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय), दयालबाग आगरा से
संगीत विषय में पी.एच.डी. की आंशिक पूर्ति हेतु शोध प्रबंध की
प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

श्वेता माथुर

शोध निर्देशिका

प्रो0 सुधा सहगल

संगीत (गायन)

संगीत विभाग, कला संकाय

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग आगरा-282005

2023

भूमिका

औडव जाति उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत पद्धति की एक विशिष्ट संरचना है जिसके अन्तर्गत आरोही एवं अवरोही क्रम में पाँच स्वरों का प्रयोग होता है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में इस जाति पर अनेक राग आधारित है। जाति-भेद के अनुसार इस जाति के अन्य प्रकार जैसे औडव-औडव, औडव-षाडव, औडव-सम्पूर्ण का भी राग-व्यवस्थापन में महत्त्वपूर्ण योगदान है। समय चक्र के अनुरूप औडव जाति के राग अपने वैशिष्ट्य सहित सभी प्रहरों में व्यवस्थित होते हैं तथा विभिन्न गायन-शैलियों में प्रयुक्त होते हैं।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की समस्त गायन-शैलियों की अपनी मूल्यात्मक विशेषता है, जिनमें ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा, तराना इत्यादि अपनी शैलीगत क्रियात्मक सृजनात्मकता के कारण विशिष्ट रूप से प्रतिष्ठित हैं। किंतु मध्य लय पर आधारित गायन शैलियाँ बोलबाँट ठुमरी सादरा, दादरा, चतुरंग ऐसी मध्यलय आधारित गायन शैलियाँ हैं जिनमें मध्यलय प्रधान गायकी विशेषताएँ जैसे - बोल एवं मात्राओं का समन्वयात्मक पक्ष, लयकारी प्रधान स्वर एवं बोल प्रयोग, विशिष्ट रचनावयव - भाग तथा विशेष आलाप अंग तथा लघु तानें समाहित रहती हैं जो प्रकाश में नहीं आयी हैं। अतः कहने का तात्पर्य यह है कि विभिन्न गायन शैलियाँ अपने अस्तित्व में विशिष्ट तत्त्वों, मूल्यों व पक्षों को चिन्हित करती है जिनका गहन सैद्धांतिक, मूल्यात्मक व क्रियात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए। दूसरी ओर औडव जाति के रागों का स्वरूप राग-प्रयुक्तिकरण, रचनात्मक सौष्ठव की भी अपनी विशिष्ट रचनाधर्मिता व सृजनात्मकता है तथा इन्हें सैद्धांतिक, मूल्यात्मक व क्रियात्मक रूप में किस प्रकार जाना जा सकता है? यह जानना शोधकत्री के लिए जिज्ञासा का विषय है क्योंकि शोधकत्री संगीत की छात्रा है तथा क्रियात्मक पक्ष में अत्यधिक रुचि होने के कारण शास्त्रीय संगीत के प्रयोगात्मक व क्रियात्मक पक्ष पर गहन अध्ययन करना ध्येय भी है।

प्रस्तावित शोध पर जब पाठन सामग्री के अध्ययन का निश्चय किया गया तो सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण अत्यन्त आवश्यक था, अतः शोधकत्री द्वारा किये गये संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण का वृहद विवरण इस प्रकार है-

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययनः-

पुस्तकें-

- क्रमिक पुस्तक मालिका (1-6 भाग), पं. विष्णु नारायण भातखण्डे, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1995
- अभिनव गीतांजली (1-6 भाग), पं. रामाश्रय झा 'रामरंग', संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद, 1990
- निबंध संगीत, लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस, 2000
- ख्याल गायकी और भक्ति रस, डॉ. अमिता पाण्डे, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010
- संगीत-सागर, प्रभुलाल गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1985
- संगीत-भाष्य, श्रीपद बंधोपाध्याय, बी0आर0 पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली-1958
- राग-रहस्य, आचार्य बृहस्पति, सुलोचना बृहस्पति, अभिषेक पब्लिशिंग, चण्डीगढ़, 2008
- सफर ठुमरी गायकी का, अंजली पोहनकर, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2009
- संगीत शास्त्र: के0 वासुदेव शास्त्री, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश 1958
- भारतीय संगीत का इतिहासः ठाकुर जयदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशनचैक, वाराणसी, 1994
- भारतीय संगीत में 'निबद्ध'- ताल, गीतक, प्रबंध, छन्द व ध्रुवा का लक्षण-लक्ष्यमूलक अध्ययन, सुभद्रा चैधरी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2004
- मल्हार के प्रकार- जयसुखलाल त्रि. शाह 'विनय' शाह परिवार, मुम्बई, 1969
- प्रान्तीय संगीत विविध पक्ष, डॉ. सुधा सहगल, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2010
- ठुमरी की उत्पत्ति विकास और शैलियाँ शत्रुघ्न शुक्ल (हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेशालय), दिल्ली विश्वविद्यालय, 1983

शोध-प्रबन्धः-

- हिन्दुस्तानी संगीत के दस थाटों के कतिपय रागों की बंदिशों के विविध स्वरूपः विश्लेषणात्मक अध्ययन, माहेश्वरी

लवी, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2009

- स्वतंत्र भारत के नवनिर्मित कतिपय रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, श्रीवास्तव मालती, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा 1992
- ख्याल गायन शैली के परिपे्रक्ष्य में तबले की संगत का क्रियात्मक तथा सैद्धांतिक अध्ययन, कुमारी नीतू, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2019
- बीसवीं सदी के कतिपय मूर्धन्य वाग्गेयकारों द्वारा निर्मित नवीन राग-रूपों की सांगीतिक व विश्लेषणात्मक अध्ययन, शर्मा डिम्पल, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2015
- उत्तर भारतीय संगीत में शास्त्रीय गायन की विविध गायन शैलियों का क्रमिक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन, खरे श्वेता, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, 2020
- उपशास्त्रीय संगीतात्मक विधाओं के तात्विक परिप्रेक्ष्य में बेगम अख्तर की गायकी का विस्तृत अध्ययन, कु. मुक्ता, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2005
- उत्तर भारतीय शास्त्रीय, उपशास्त्रीय व सुगम संगीत की गायन शैलियों की भावनात्मक एवं कलात्मक सौन्दर्यवृद्धि में सहायक वाद्यों के प्रयोग का अध्ययन एवं तुलनात्मक विवेचन, राधारानी दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2005
- आगरा घराने की तराना गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन, कौशिक सोनल, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2005

लघु शोध प्रबन्धः-

- औड़व-औडव जाति के दस रागों का अध्ययन, राज रितु, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2000

- आगरा घराने की बोलबाँट ठुमरी- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, शर्मा चंचल, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2010
- औड़व-सम्पूर्ण जाति के कतिपय प्रचलित एवं अप्रचलित सांयकालीन सन्धिप्रकाश रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, बाला रेनू, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2012
- आगरा घराने का सादरा गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन, सत्संगी अर्शा, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2015

शोध-पत्रः-

- भारतीय शास्त्रीय संगीत और घराना परम्परा, शर्मा सुवर्णलता Journal of Indian Musicological Society 2009, Page No. 267, 268, 274, Mumbai, Baroda.
- ख्याल गायन शैलीः विकसित आयामः शर्मा सत्यवती, पंचशील प्रकाशन, जयपुर राजस्थान ISBN No. 81-81-7056-009-3, 1994
- भारतीय संगीत में ध्रुपद गायन शैली से ख्याल गायन शैली का विकास एक अध्ययनः सहस्त्रबुद्धे स्मिता, नई दिल्ली Department of culture Ministry of Human resource and Develop, Govt. of India, Classical on No. 782-02954, item No. SAH B 2002
- घराने की परम्परा और हिन्दुस्तानी संगीत में इसका महत्व, महुआ रॉय, रवीन्द्र भराली, Page No. 20 The Tripura University Research Journal, Dec. 2020.
- घरानों का संगम, मिश्रा पं0 श्यामदास, संगीत कला बिहार, अंक 8, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन, 2011

पत्र-पत्रिकाएँ: -

- छायानट अंक (1993-1997), श्रीकृष्ण नारायण रातनजनकर, केशव चन्द्र वर्मा, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक

अकादमी, कैसरबाग, लखनऊ

- संगीत, अप्रचलित राग ताल अंक, जनवरी-फरवरी, 1983 संगीत कार्यालय, हाथरस
- संगीत कला विहार, अगस्त-दिसम्बर, 2011 अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय, मंडल, मुंबई
- संगीत, अक्टूबर, 1994, संगीत कार्यालय, हाथरस
- संगीत, अक्टूबर, 1991, संगीत कार्यालय, हाथरस

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण का सारः-

सम्बन्धित साहित्य के वृहद सर्वेक्षण के उपरान्त यह ज्ञात होता है कि केवल औडव जाति के रागों पर आधारित कोई साहित्य सामग्री विशेष रूप से प्राप्त नहीं होती। जिन पुस्तकों में रागों का विस्तृत शास्त्रीय परिचय एवं क्रियात्मक रचनाधार है उन्हीं के अन्तर्गत कहीं-कहीं औडव जाति के रागों का विवरण प्राप्त होता है, जैसे-भातखण्डे जी कृत 'क्रमिक पुस्तक मालिका' (1-6 भाग), पं. रामाश्रय झा द्वारा रचित 'अभिनव गीतांजली' (1-6 भाग), पं. विनायक राव पटवर्धन द्वारा रचित 'राग-विज्ञान' (1-7 भाग) आदि। गायन-शैलियों पर भी विशेष रूप से कोई साहित्य प्राप्त नहीं होता। यदि यत्र-तत्र कहीं प्राप्त होता है तो वह केवल गद्यांश के रूप में परिचय मात्र का ही द्योतक है। आश्चर्य का विषय है कि औडव जाति के रागों में विभिन्न गायन-शैलियों के परिप्रेक्ष्य में सैद्धांतिक, मूल्यात्मक, क्रियात्मक पक्ष तो कहीं भी प्राप्त नहीं होते। निम्न आरेख में मध्य लयाधारित गायन-शैलियों व औडव जाति प्रधान रागों के तत्त्वों को भविष्यात्मक शोध की दृष्टि से स्पष्ट किया जा रहा है

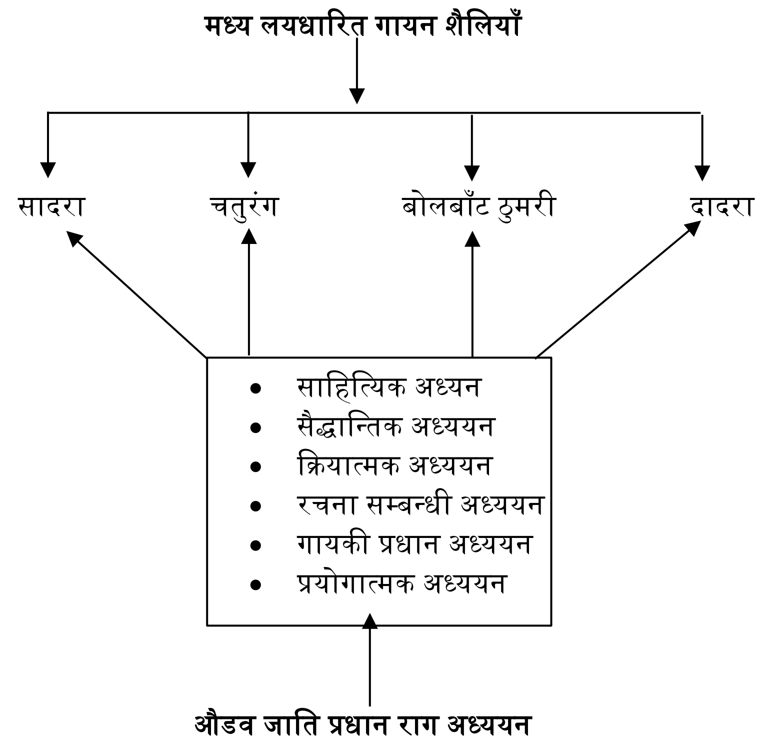

अतः औडव जाति के रागों के गहन अध्ययन हेतु, इनके क्रियात्मक स्वरूप को जानने व सीखने हेतु, विभिन्न गायन-शैलियों में विशेष रूप से मध्य लयाधारित गायन-शैलियों का ज्ञान अर्जित करने के लिए शोधकत्री द्वारा निम्न विषय का चयन किया गया-

विषय-कथन- "विभिन्न औडव जाति प्रधान रागों का मध्य लयाधारित गायन-शैलियों में मूल्यात्मक व क्रियात्मक अध्ययन"

विषय-कथन में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्याः-

- औडव (सं.पु.एक.) - भारतीय संगीत में पाँच स्वरों का प्रयोग

  - संगीत शास्त्र, के. वासुदेव शास्त्री

- जाति (सं.स्त्री.एक.) - समुदाय, समूह

  - वर्धा हिन्दी शब्दकोश, रामप्रकाश सक्सेना

- राग (सं.पु..एक.) - चित्त प्रसन्न करने वाला स्वर सन्दर्भ।

  - संगीत पारिजात, पं. अहोबल

- मध्य लय (सं.एक.) -संगीत में स्वर व ताल का निर्वाह। लय के तीन प्रकार हैं-

  - द्रुत, मध्य, विलंबित

  - अमरकोश, भारत का कोश, अमर सिंह

- गायन-शैली (स्त्री.) -(संगीत गायन) गायन विधा का पूरा ज्ञन, गाने की क्रिया या भाव।

  लोक भारतीय प्रमाणिक हिन्दी शब्दकोश-आचार्य रामचन्द्र वर्मा

- मूल्यात्मक (वि.पु.) - मूल्य या मान के रूप में होने वाला।

  - हिन्दवी शब्दकोश, सिद्धेश्वर सिंह

- क्रियात्मक (वि.पु.) - जिसे क्रिया व कार्य के रूप में किया जा सकता है

  - हिन्दवी शब्दकोश, सिद्धेश्वर सिंह

- अध्ययन (सं.पु.) - किसी विषय की गहनता से पढ़ाई

  - हिन्दवी शब्दकोश, सिद्धेश्वर सिंह

अध्ययन की आवश्यकता-

- विभिन्न औडव जाति के रागों का वृहद सैद्धांतिक, क्रियात्मक व मूल्यात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता है।
- कतिपय औडव जाति के अप्रचलित रागों को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है।
- मध्य लयाधारित गायन-शैलियों को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है।
- मध्य लयाधारित गायन-शैलियों के विशिष्ट क्रियात्मक तत्वों को स्पष्ट करने की अत्यंत आवश्यकता है।
- औडव जाति के प्रचलित रागों को मध्य लय प्रधान गायन-शैलियों के अन्तर्गत निरीक्षित करने की अत्यंत आवश्यकता है।

अध्ययन का महत्त्व-

- मध्य लयाधारित गायन शैलियों को स्वतन्त्र रूप में कहीं उजागर नहीं किया गया है तथा इनके अन्तर्गत निहित विशिष्ट तत्व भी किसी एक स्थान पर प्राप्त नहीं होता है। अतः प्रस्तावित शोध प्रबंध मध्य लयाधारित गायन शैलियों के विशिष्ट तत्वों को उजागर करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगा।

- औडव जाति के प्रचलित व अप्रचलित रागों का भी स्पष्टीकरण करने में प्रस्तावित शोध प्रबंध का महत्व सिद्ध होगा।
- औडव जाति प्रधान रागों को सैद्धांतिक अर्थात् नियमबद्ध, मूल्यात्मक अर्थात विशिष्ट पद प्रधान व क्रियात्मक अर्थात् प्रायोगिक दृष्टि से स्पष्ट करने में भी यह शोध प्रबंध महत्वपूर्ण होगा।
- विभिन्न राग रचना साहित्य को श्रेणी के अनुसार संकलित करना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा।

अध्यन के उद्देश्य-

- औडव जाति प्रधान रागों को खोजना व अध्ययन करना
- मध्य लयाधारित गायन शैलियों के इतिहास व क्रमिक विकास का अध्ययन करना
- मध्य लयाधारित गायन शैलियों के विशिष्ट तत्वों को स्पष्ट कर उनमें सैद्धांतिक व मूल्यात्मक पक्ष उजागर करना
- औडव जाति प्रधान रागों का अध्ययन मध्य लयाधारित गायन शैलियों में सूक्ष्मता से निरीक्षित करना व विभिन्न रचनाओं का विश्लेषण करना
- विभिन्न विद्वानों, कलाकारों व विशेषज्ञों से साक्षात्कार कर विविध जानकारियाँ प्राप्त करना।

विषय परिसीमांकन-

कार्य एवं समय सीमा को देखते हुए प्रस्तावित शोध अध्ययन को केवल बीस रागों तक ही सीमित किया जायेगा।

कार्यविधि एवं उपकरण-

प्रस्तावित शोध हेतु सर्वेक्षणात्मक व व्याख्यात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा तथा विभिन्न पुस्तकालयों, संस्थाओं तथा अकादमियों से सामग्री प्राप्त की जायेगी। रेडियो, टी.वी. व इंटरनेट के माध्यम से भी सूचनायें एकत्रित की जायेगी। विभिन्न रिकॉर्डिंग अथवा ध्वन्यांकित सामग्री का प्रयोग भी किया जायेगा। शोध उपकरणों में प्रश्नावली, अनुसूची, निर्धारण मापनी का प्रयोग किया जायेगा तथा अन्य उपकरणों जैसे-सी.डी., वीडियो कैमेरा, कम्प्यूटर आदि का प्रयोग किया जायेगा।

अध्यायों का विभाजन-

- **प्रथम अध्याय-**

  सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन एवं पुनरावलोकन।

- **द्वितीय अध्याय-**

  (क) हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में विविध वर्गीकरण

  (ख) विविध जाति वर्गीकरण एवं औडव जाति का इतिहास व विकास

- **तृतीय अध्याय-**

  (क) औडव राग व मध्य लयाधारित गायन शैलियाँ-मूल्यात्मक अध्ययन

  (ख) औडव राग व मध्य लयाधारित गायन शैलियाँ- क्रियात्मक अध्ययन

- **चतुर्थ अध्याय -**

  मध्य लयाधारित गायन शैलियों में औडव रागों का सैद्धान्तिक व क्रियात्मक विश्लेषण

- **पंचम अध्याय-**

  (क) विभिन्न औडव जाति रागों का रचना प्रधान संकलन

  (ख) विभिन्न औडव जाति रागों का स्वरचित रचना सम्बन्धी संकलन

निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

रूपरेखा निर्मित करने से पूर्व विभिन्न कलाकारों/विद्वानो से पूछी गई प्रश्नावली

- औडव जाति का इतिहास क्या है?
- प्राचीन जातियाँ और आधुनिक जातियों में कितना अंतर हुआ है?
- जाति वर्गीकरण का आधार क्या है?
- विविध गायन शैलियों पर प्रकाश डालिये?
- गायन शैलियों का लय से सम्बन्धित क्या महत्व है?
- क्या गायन शैलियाँ विविध लयों में अपने स्वरूप को परिवर्तित करती है?

- क्या लय के अनुसार गायन-शैलियों में कुछ तत्व समाहित हो जाते हैं तो कुछ तिरोहित हो जाते हैं?
- औडव जाति के रागों की संरचना क्या है?
- औडव जाति प्रधान राग क्या इंगित करते हैं?
- गायन शैलियों में एक ही रना को विविध लयों में क्या प्रयुक्त किया जा सकता है?
- सादरा गायन शैली का इतिहास क्या है?
- सादरा गायन शैली का सैद्धान्ति स्वरूप क्या है?
- सादरा गायन शैली का विकास क्रम क्या है?
- सादरा गायन शैली का साहित्यिक प्रयोग कितना महत्वपूर्ण है?
- सादरा गायन शैली को झपताल में ही क्यों प्रयुक्त किया जा सकता है?
- ख्याल गायन शैली का इतिहास क्या है?
- ख्याल गायन शैली का विकास क्रम क्या है?
- ख्याल गायन शैली का साहित्यिक प्रयोग कितना महत्वपूर्ण है?
- धमार गायन शैली का इतिहास क्या है?
- धमार गायन शैली का विकास क्रम क्या है?
- धमार गायन शैली का साहित्यिक प्रयोग कितना महत्वपूर्ण है?
- धमार गायन शैली का सैद्धान्तिक स्वरूप क्या है?
- बोल बांट ठुमरी का इतिहास क्या है?
- बोल बांट ठुमरी का विकास क्रम क्या है?

- बोल बांट ठुमरी का सैद्धान्तिक स्वरूप क्या है?-
- बोल बांट ठुमरी का साहित्यिक प्रयोग कितना महत्वपूर्ण है?

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें -

- क्रमिक पुस्तक मालिका (1-6 भाग), पं. विष्णु नारायण भातखण्डे, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1995
- अभिनव गीतांजली (1-6 भाग), पं. रामाश्रय झा 'रामरंग', संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद, 1990
- निबंध संगीत, लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस, 2000
- ख्याल गायकी और भक्ति रस, डॉ. अमिता पाण्डे, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010
- संगीत-सागर, प्रभुलाल गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस, 1985
- संगीत-भाष्य, श्रीपद बंधोपाध्याय, बी0आर0 पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली-1958
- राग-रहस्य, आचार्य बृहस्पति, सुलोचना बृहस्पति, अभिषेक पब्लिशिंग, चण्डीगढ़, 2008
- सफर ठुमरी गायकी का, अंजली पोहनकर, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2009
- संगीत शास्त्र: के0 वासुदेव शास्त्री, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश 1958
- भारतीय संगीत का इतिहासः ठाकुर जयदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशनचैक, वाराणसी, 1994
- भारतीय संगीत में 'निबद्ध'- ताल, गीतक, प्रबंध, छन्द व ध्रुवा का लक्षण-लक्ष्यमूलक अध्ययन, सुभद्रा चैधरी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2004
- मल्हार के प्रकार- जयसुखलाल त्रि. शाह 'विनय' शाह परिवार, मुम्बई, 1969
- प्रान्तीय संगीत विविध पक्ष, डॉ. सुधा सहगल, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2010
- ठुमरी की उत्पत्ति विकास और शैलियाँ शत्रुघ्न शुक्ल (हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेशालय), दिल्ली विश्वविद्यालय,

1983

शोध-प्रबन्धः-

- हिन्दुस्तानी संगीत के दस थाटों के कतिपय रागों की बंदिशों के विविध स्वरूपः विश्लेषणात्मक अध्ययन, माहेश्वरी लवी, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2009
- स्वतंत्र भारत के नवनिर्मित कतिपय रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, श्रीवास्तव मालती, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा 1992
- ख्याल गायन शैली के परिप्रेक्ष्य में तबले की संगत का क्रियात्मक तथा सैद्धांतिक अध्ययन, कुमारी नीतू, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2019
- बीसवीं सदी के कतिपय मूर्धन्य वाग्गेयकारों द्वारा निर्मित नवीन राग-रूपों की सांगीतिक व विश्लेषणात्मक अध्ययन, शर्मा डिम्पल, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2015
- उत्तर भारतीय संगीत में शास्त्रीय गायन की विविध गायन शैलियों का क्रमिक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन, खरे श्वेता, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, 2020
- उपशास्त्रीय संगीतात्मक विधाओं के तात्विक परिप्रेक्ष्य में बेगम अख्तर की गायकी का विस्तृत अध्ययन, कु. मुक्ता, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2005
- उत्तर भारतीय शास्त्रीय, उपशास्त्रीय व सुगम संगीत की गायन शैलियों की भावनात्मक एवं कलात्मक सौन्दर्यवृद्धि में सहायक वाद्यों के प्रयोग का अध्ययन एवं तुलनात्मक विवेचन, राधारानी दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2005
- आगरा घराने की तराना गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन, कौशिक सोनल, दयालबाग एजूकेशनल

इंस्टीट्यूट, आगरा, 2005

लघु शोध प्रबन्धः-

- औड़व-औडव जाति के दस रागों का अध्ययन, राज रितु, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2000
- आगरा घराने की बोलबाँट ठुमरी- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, शर्मा चंचल, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2010
- औड़व-सम्पूर्ण जाति के कतिपय प्रचलित एवं अप्रचलित सांयकालीन सन्धिप्रकाश रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, बाला रेनू, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2012
- आगरा घराने का सादरा गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन, सत्संगी अर्शा, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, 2015

शोध-पत्रः-

- भारतीय शास्त्रीय संगीत और घराना परम्परा, शर्मा सुवर्णलता Journal of Indian Musicological Society 2009, Page No. 267, 268, 274, Mumbai, Baroda.
- ख्याल गायन शैलीः विकसित आयामः शर्मा सत्यवती, पंचशील प्रकाशन, जयपुर राजस्थान ISBN No. 81-81-7056-009-3, 1994
- भारतीय संगीत में ध्रुपद गायन शैली से ख्याल गायन शैली का विकास एक अध्ययनः सहस्त्रबुद्धे स्मिता, नई दिल्ली Department of culture Ministry of Human resource and Develop, Govt. of India, Classical on No. 782-02954, item No. SAH B 2002
- घराने की परम्परा और हिन्दुस्तानी संगीत में इसका महत्व, महुआ रॉय, रवीन्द्र भराली, Page No. 20 The Tripura University Research Journal, Dec. 2020.
- घरानों का संगम, मिश्रा पं0 श्यामदास, संगीत कला बिहार, अंक 8, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल

प्रकाशन, 2011

पत्र-पत्रिकाएँ: -

- छायानट अंक (1993-1997), श्रीकृष्ण नारायण रातनजनकर, केशव चन्द्र वर्मा, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, कैसरबाग, लखनऊ
- संगीत, अप्रचलित राग ताल अंक, जनवरी-फरवरी, 1983 संगीत कार्यालय, हाथरस
- संगीत कला विहार, अगस्त-दिसम्बर, 2011 अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय, मंडल, मुंबई
- संगीत, अक्टूबर, 1994, संगीत कार्यालय, हाथरस
- संगीत, अक्टूबर, 1991, संगीत कार्यालय, हाथरस